→

Page
Date

प्लेटो

सुकरात के परम शिष्य प्लेटो पाश्चात्य जगत सर्वप्रथम सुव्यवस्थित दर्शन को जन्म देने वाले माने जाते हैं। इन्होंने सुकरात के विचारों का संग्रह संवाद रूप में अपने ग्रंथों में प्रस्तुत किया।

ग्रंथ –
1. रिपब्लिक
2. अपॉलॉजी
3. स्टेटमेन्ट्स

ये भी प्रत्ययवादी दार्शनिक हैं।

ज्ञान सिद्धान्त

प्लेटो का ज्ञान सिद्धांत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उनके अन्य विचार भी इसी पर आधारित हैं। उनके ज्ञान सिद्धांत के दो पक्ष हैं –

A **निषेध पक्ष** – ज्ञान के खण्डन पक्ष द्वारा प्लेटो यह बताते हैं कि ज्ञान क्या नहीं है।

B **विधि पक्ष** – ज्ञान के स्वीकारात्मक पक्ष द्वारा प्लेटो यह बताते हैं कि ज्ञान क्या है।

प्लेटो कहते हैं कि ज्ञान का निषेध पक्ष विधि पक्ष से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ज्ञान क्या है यह जानने से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि ज्ञान क्या नहीं है।

ज्ञान का निषेध पक्ष

1. "ज्ञान प्रत्यक्ष है" का खण्डन →

(A) सोफिस्टों के अनुसार इंद्रिय ज्ञान अर्थात प्रत्यक्ष ही यथार्थ ज्ञान है। प्लेटो कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इंद्रियाँ भिन्न - भिन्न ज्ञान देती हैं तो फिर सभी के ज्ञान को सत्य माना जाएगा।

(B) प्लेटो कहते हैं कि प्रत्यक्ष हमेशा सत्य नहीं होता, क्योंकि यह भी गलत ज्ञान दे देता है। एक ही वस्तु विभिन्न प्रकाश में विभिन्न रंगों की दिखाई देती है।

(C) यदि प्रत्यक्ष ही प्रमाण है तो एक बालक और वृद्ध के एक गुरु और शिष्य के, एक मूर्ख और विद्वान के प्रत्यक्ष में कोई अंतर नहीं है और सभी का ज्ञान यथार्थ है। पर क्या ऐसा माना जा सकता है?

(D) "ज्ञान प्रत्यक्ष है" - यह सिद्धांत सत्य की वस्तुनिष्ठता व सार्वभौमिकता को समाप्त कर देता है तथा ज्ञान को पूर्णतः व्यक्तिगत बना देता है। इससे ज्ञान की प्रामाणिकता ही समाप्त हो जाती है।

(E) यदि प्रत्यक्ष ही ज्ञान है तो प्रत्यक्ष तो एक पशु को भी होता है। फिर पशु और मनुष्य के ज्ञान में क्या अंतर है।

(F) ज्ञान को प्रत्यक्ष मानकर सोफिस्ट स्वयं अपने सिद्धांत का ही विरोध करते हैं क्योंकि यदि किसी को सोफिस्टों का सिद्धांत असत्य प्रतीत होता है तो उन्हें यह मान लेना चाहिए, क्योंकि प्रत्यक्ष ही यथार्थ ज्ञान है।

2. "ज्ञान धारणा है" का खण्डन -

(A) प्लेटो कहते हैं कि धारणा को भी ज्ञान नहीं माना जा सकता, क्योंकि धारणा कल्पना से उत्पन्न होती है तथा उसका कोई तार्किक आधार नहीं होता।

(B) धारणा निश्चयात्मक नहीं होती। यह सत्य भी हो सकती है, असत्य भी। अतः इसे ज्ञान नहीं माना जा सकता।

(C) धारणा व्यक्तिगत कल्पना या विश्वास पर आधारित होती है जिसका कोई बौद्धिक आधार नहीं है, जबकि ज्ञान बुद्धि से उत्पन्न होता है। अतः धारणा ज्ञान नहीं है।

ज्ञान का विधि पक्ष (सकारात्मक पक्ष)

सुकरात के समान ही प्लेटो भी मानते हैं कि ज्ञान निश्चित, सार्वभौमिक, वस्तुनिष्ठ तथा अपरिवर्तनीय होना चाहिए और ऐसा ज्ञान प्रत्ययों का ही हो सकता है, वस्तुओं का नहीं।

प्रत्यय बुद्धि से प्राप्त होते हैं अतः ज्ञान बौद्धिक एवं प्रत्ययात्मक ही होता है।

प्लेटो के अनुसार ज्ञान चार प्रकार का होता है -

(i) काल्पनिक ज्ञान - यह ज्ञान का निम्नतम स्तर है। वस्तुतः यह ज्ञान नहीं ज्ञान का आभास है। यह भ्रामक और मिथ्या होता है। इसका कोई अस्तित्व नहीं होता। इसमें भ्रम विभ्रम सभी शामिल हैं।

(ii) व्यावहारिक ज्ञान - यह इंद्रियों द्वारा प्राप्त व्यावहारिक जगत् का ज्ञान है। यह काल्पनिक से अधिक विश्वसनीय होता है, पर पूर्णतः सत्य नहीं। यह क्षणिक एवं परिवर्तनशील होता है।

(iii) बौद्धिक ज्ञान - यह बुद्धि द्वारा प्राप्त गणित एवं ज्यामिति का ज्ञान है, जो कभी परिवर्तित नहीं होता तथा सार्वभौमिक एवं निश्चित होता है। यह ज्ञान प्रत्ययों और व्यावहारिक जगत में संबंध स्थापित करता है।

(iv) विवेक ज्ञान - यह ज्ञान का उच्चतम स्तर है। यह आत्मा से प्राप्त विशुद्ध प्रत्ययों का ज्ञान है जो प्रमाणित, निरपेक्ष, यथार्थ, निश्चित तथा अपरिवर्तनशील होता है।

प्रत्यय सिद्धान्त (विज्ञानवाद)

विज्ञान = प्रत्यय = संप्रत्यय

प्लेटो के दर्शन में सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांत उनका विज्ञानवाद है। प्लेटो के ज्ञान का सिद्धांत वस्तुतः प्रत्ययों का ही सिद्धांत है क्योंकि ज्ञान प्रत्ययों द्वारा प्राप्त किया जाता है और प्रत्यय बुद्धि द्वारा ग्रहण किए जाते हैं।

2. विज्ञानवाद तात्विक सिद्धांत है - प्लेटो के अनुसार प्रत्यय केवल मानसिक विचार नहीं, अपितु तत्त्व हैं। ये सामान्य, नित्य, अपरिवर्तनशील और वस्तुओं के सार तत्त्व हमारे ज्ञान के एकमात्र

विषय है।

2. विज्ञानवाद वस्तुनिष्ठ सिद्धांत है - प्लेटो के अनुसार प्रत्ययों की सत्ता हमारे मन पर आधारित नहीं है। प्रत्यय वास्तविक तत्व हैं, जो निरपेक्ष तथा वस्तुनिष्ठ हैं और इनका अस्तित्व हमारे मन से स्वतंत्र और अलग है।

3. संवाद सिद्धांत → इसके अनुसार सत्य ज्ञान वही है जिसके अनुरूप बाह्य जगत में वस्तु हो। प्लेटो कहते हैं कि मानसिक प्रत्यय एवं बाह्य जगत में सामंजस्य होना चाहिए। यही संवाद सिद्धांत है।

4. इंद्रिय जगत एवं प्रत्यय जगत अलग-अलग हैं → प्लेटो ने स्पष्ट रूप से दो जगत माने हैं - प्रत्यय जगत तथा इंद्रिय जगत। प्रत्यय जगत में प्रत्यय निवास करते हैं तथा इंद्रिय जगत में वस्तुएँ। प्रत्यय जगत पूर्ण है और इंद्रिय जगत इसकी अपूर्ण अभिव्यक्ति है। इंद्रिय जगत का लक्ष्य प्रत्यय जगत को प्राप्त करना है।

5. विज्ञानवाद का आधार इंद्रिय जगत है → प्लेटो के प्रत्यय सिद्धांत का आरंभ इंद्रिय जगत के अवलोकन से होता है। इंद्रिय जगत में कोई भी वस्तु या गुण निरपेक्ष रूप से सत्य या स्थायी नहीं है, सब परिवर्तनशील है। अतः इनका निश्चित ज्ञान असंभव है। अतः केवल प्रत्यय ही ज्ञान के विषय हो सकते हैं जो सत्य एवं स्थायी हैं।

Page
Date

प्रत्ययों की विशेषताएँ -

1. प्रत्यय द्रव्य हैं - प्लेटो के अनुसार प्रत्यय पूर्णतः एवं निर हैं तथा जगत की सभी वस्तुएँ इन पर निर्भर हैं, ये किसी पर आश्रित नहीं हैं। अतः ये द्रव्य हैं।

2. प्रत्यय सामान्य एवं सार्वभौमिक हैं - प्रत्यय वे तत्त्व हैं जो एक वर्ग की सभी व से सामान्य रूप से समाहित हैं तथा इन पर देश, काल परिस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. प्रत्यय वस्तुएँ नहीं, अपितु विचार हैं - प्लेटो के अनुसार प्रत्यय मूर्त वस्तुएँ न हैं अपितु अमूर्त विचार हैं जिनका ज्ञान इंद्रियों से नहीं अपितु बुद्धि से होता है।

4. प्रत्यय वस्तुओं के अनिवार्य तत्त्व हैं - प्रत्यय वस्तुओं के वे अनिवार्य तत्त्व होते हैं जिनके बिना वस्तु का अस्तित्व ही नहीं हो सकता। जैसे - मनुष्यत्व के बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव ही नहीं है।

5. प्रत्यय नित्य और अपरिवर्तनशील होते हैं - प्रत्यय वस्तु के मानदंड, परिभाषा या अवधारणा होते हैं जो निश्चित, शाश्वत और कभी न बदलने वाले होते हैं।

6. प्रत्यय अनेकता में एकता लाता है - एक वर्ग की सभी वस्तुओं का प्रत्यय एक होता है जैसे मनुष्य असंख्य हैं लेकिन मनुष्यत्व एक ही है और इसी के कारण सभी मनुष्य एक ही वर्ग में

रखे जाते हैं।

7. प्रत्यय देश काल से परे हैं - प्रत्यय अनादि, अनन्त, निरपेक्ष एवं सार्वभौमिक हैं। ये किसी स्थान या समय से बंधे हुए नहीं हैं। अतः ये कभी नष्ट नहीं होते।

8. प्रत्यय इंद्रियजन्य नहीं हैं - प्रत्यय अमूर्त हैं अतः इनका ज्ञान इंद्रियों से नहीं, अपितु बुद्धि से होता है।

9. प्रत्यय पूर्ण शुद्ध हैं - प्रत्यय विशुद्ध विचार हैं। जैसे - मनुष्यत्व एक पूर्ण आदर्श मनुष्य का विचार है, मनुष्य उसकी अनुकृति मात्र है।

10. प्रत्यय पूर्णता के सूचक हैं - विश्व की सभी वस्तुएँ विकास के मार्ग पर इन्हीं की ओर अग्रसर हैं। जो वस्तु प्रत्यय के जितनी निकट है, वह उतनी ही सत्य है।

11. प्रत्यय पारमार्थिक जगत में रहते हैं - इस जगत को प्रत्यय जगत भी कहते हैं। यह शाश्वत व स्थिर है तथा इंद्रिय जगत के बनने - बिगड़ने का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

12. सर्वोच्च प्रत्यय शुभ का प्रत्यय है - प्लेटो ने शुभ को ईश्वर माना है तथा शुभ के प्रत्यय को सर्वोच्च प्रत्यय माना है। अन्य सभी प्रत्यय इस परम शुभ की अभिव्यक्ति है।

प्रत्यय जगत की सिद्धि के प्रमाण -

प्लेटो के अनुसार प्रत्यय ही जगत के मूल कारण हैं तथा ये इंद्रिय जगत से परे प्रत्यय-जगत में निवास करते हैं, जिसका ज्ञान हमें इंद्रियों से नहीं होता। अतः इस जगत की सिद्धि के लिए प्लेटो कुछ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं -

1. **विज्ञानमूलक तर्क** - प्लेटो कहते हैं कि विश्व में ज्ञान-विज्ञान का अस्तित्व है अतः इनका कोई विषय अवश्य होना चाहिए। भौतिक वस्तुएँ अनित्य और परिवर्तनशील होने के कारण ज्ञान के विषय नहीं हो सकतीं। अतः ज्ञान के वास्तविक विषय नित्य, शाश्वत तथा अपरिवर्तनशील प्रत्यय ही हो सकते हैं।

2. **अभेदमूलक तर्क** - इंद्रिय जगत में केवल विशेषों की ही सत्ता है तथा किसी भी वस्तु में सामान्य या आदर्श वस्तु के गुण नहीं पाए जाते। अतः इस जगत से परे एक प्रत्यय जगत मानना होगा जहाँ सामान्य अर्थात् प्रत्यय रहते हैं।

3. **अभावमूलक तर्क** - हमारा मानसिक विचार एक पूर्ण वस्तु का होता है तथा विशेष वस्तुओं में प्रत्यय के सभी गुण नहीं रहते, कुछ अभाव होता है जो पूर्णता की ओर संकेत करता है। ये ही पूर्ण प्रत्यय हैं।

4. **सम्बन्धमूलक तर्क** - एक वर्ग की सभी वस्तुएँ एक समानता का अनुसरण करती हैं और तभी एक नाम से जानी जाती हैं। यह परस्पर संबंध

प्रत्यय के कारण ही है जो प्रत्यय जगत में रहते हैं।

5. तृतीय मनुष्य मूलक तर्क → जब एक वर्ग की वस्तुओं को एक नाम से जाना जाता है तो इसका अर्थ है कि वे एक सामान्य प्रत्यय से संबंध रखती हैं, भले ही वे प्रत्यय जितनी पूर्ण नहीं होती। ये प्रत्यय ही उन्हें संबंधित करते हैं।

प्रत्यय जगत और वस्तु जगत में संबंध

प्लेटो के दर्शन में वस्तु और प्रत्यय में मौलिक भेद है। प्रत्यय सामान्य हैं, वस्तुएँ विशेष, प्रत्यय एक है वस्तुएँ अनेक, प्रत्यय देशकाल से परे हैं, वस्तुएँ देशकाल में सीमित, प्रत्यय अमूर्त हैं, वस्तुएँ मूर्त, प्रत्यय अपरिवर्तनशील हैं, वस्तुएँ परिवर्तनशील।

प्रश्न है कि दोनों नितांत विपरीत स्वभाव के होते हुए भी किस प्रकार संबंधित हैं? इसके लिए प्लेटो ने दो सिद्धांतों का उल्लेख किया है –

(i) अंशवाद → इस सिद्धांत के अनुसार वस्तुएं प्रत्यय के अंश हैं अर्थात अश्व अश्वत्व का अंश है। लेकिन इसमें कठिनाई यह है कि यदि वस्तुओं का प्रत्यय का अंश मानते हैं तो वस्तुओं को भी प्रत्यय जैसा शाश्वत होना होगा पर वस्तुएँ शाश्वत नहीं हैं। अतः यह सिद्धांत संतोषप्रद नहीं है।

(ii) प्रतिबिम्बवाद → इस सिद्धांत के अनुसार वस्तुएँ प्रत्ययों की प्रतिबिंब अर्थात छाया है। लेकिन इस सिद्धांत को मानने से इंद्रिय जगत पूर्णतः असत्य

हो जाता है क्योंकि छाया नितांत असत्य होती है। अतः यह सिद्धांत भी संतोषप्रद नहीं है।

प्रतिनिधिवाद :- अतः प्लेटो ने माना कि वस्तुएँ प्रत्यय जगत की प्रतिनिधि हैं। अर्थात मनुष्य मनुष्यत्व के प्रतिनिधि हैं। यह सिद्धांत उक्त दोनों कठिनाइयों से बचा लेता है।

आलोचना

(i) प्रत्यय वस्तुओं के सार एवं अनिवार्य तत्त्व होते हुए भी प्लेटो ने इन्हें अलग-अलग जगत में रहने वाले बताया है। आलोचक कहते हैं कि वस्तुओं के सारतत्त्व वस्तुओं से अलग नहीं रह सकते।

(ii) आलोचक कहते हैं कि प्लेटो ने इस जगत की व्याख्या के लिए एक अन्य जगत को स्वीकार कर लिया है जिससे समस्या दोगुनी हो जाती है।

(iii) प्लेटो ने प्रत्ययों को अपरिवर्तनशील एवं स्थिर माना है तथा इंद्रिय जगत में सर्वत्र परिवर्तन और गति है। यदि यह जगत प्रत्यय जगत से उत्पन्न हुआ है तो इन विरोधी गुणों की व्याख्या कैसे होगी।

(iv) आलोचक कहते हैं कि ये प्रत्यय वस्तुएँ ही हैं जिन्हें नित्य मान लिया गया है।

आत्मा का स्वरूप

प्लेटो ने 'रिपब्लिक' के अंतिम भाग में अपने आत्मा संबंधी विचार अभिव्यक्त किए हैं।

प्लेटो के अनुसार आत्मा का अर्थ जीवन की शक्ति है जो शरीर के नष्ट होने के बाद भी नष्ट नहीं होती।

आत्मा शरीर में गति और सक्रियता का कारण है और विवेक का आधार है अतः इसका संबंध प्रत्यय जगत से है तथा गति का कारण होने से इसका संबंध इंद्रिय जगत से है। इस प्रकार आत्मा दोनों जगत से संबंध रखती है।

प्लेटो के अनुसार जीवात्मा मनुष्य है और विश्वात्मा ईश्वर है। विश्वात्मा पूर्ण और असीमित है जबकि जीवात्मा अपूर्ण और सीमित।

प्लेटो ने जीवात्मा के तीन भाग माने हैं -

- जीवात्मा
  - बौद्धिक
  - अबौद्धिक
    - कुलीन
    - अकुलीन

1. **बौद्धिक आत्मा** → यह जीवात्मा का सर्वोच्च तथा श्रेष्ठतम भाग है। इसका संबंध प्रत्यय जगत से है। इसी से आत्मा प्रत्ययों का ज्ञान प्राप्त करती है। इसके सभी कार्य चयनात्मक तथा विमर्शात्मक होते हैं।

2. कुलीन अबौद्धिक आत्मा – यह बौद्धिक आत्मा से कुछ निम्न स्तर का भाग है। इसमें बौद्धिकता तो नहीं होती, लेकिन इसके द्वारा कार्य उच्च कोटि की भावनाओं एवं संवेगों से संचालित होते हैं। जैसे – साहस, दया, परोपकार, स्नेह, आत्मसम्मान, देशभक्ति आदि।

3. अकुलीन अबौद्धिक आत्मा – यह आत्मा का निम्नतम भाग है। यह निम्न कोटि की भावनाओं और वासनाओं से संचालित होता है जैसे क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, भय, प्रतिशोध आदि। इस भाग पर उच्च भागों का नियंत्रण आवश्यक है क्योंकि यह स्वभाव से स्वच्छन्द है।

प्लेटो ने उक्त तीन भागों के मानव शरीर में अलग-अलग स्थान माने हैं –

बौद्धिक आत्मा – सिर
कुलीन अबौद्धिक आत्मा – छाती
अकुलीन अबौद्धिक आत्मा – जंघा (पैर)

प्लेटो मानते हैं कि आत्मा के अबौद्धिक भाग पर बौद्धिक पक्ष का नियंत्रण आवश्यक है।

आत्मा के ये तीनों भाग केवल मनुष्यों में ही पाए जाते हैं। पशुओं और वनस्पतियों में बौद्धिक आत्मा का पूर्णतः अभाव रहता है।

आत्मा की अमरता के प्रमाण

प्लेटो ने आत्मा को अमर, अविनाशी, शाश्वत, चेतन माना है तथा इसे सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए हैं -

1. प्लेटो के अनुसार प्रत्यय ही ज्ञान के वास्तविक विषय हैं पर हमें उनका प्रत्यक्ष नहीं होता। केवल इन्द्रिय अनुभव द्वारा हमें उनका संस्मरण होता है तथा यह आत्मा की अमरता के कारण ही संभव है क्योंकि आत्मा का बौद्धिक भाग ही प्रत्ययों का साक्षात्कार कर सकता है।

2. प्लेटो कहते हैं कि मनुष्य को ऐसे अनेक विषयों या घटनाओं का ज्ञान होता है जो उसने इस जीवन में अनुभव नहीं किए हैं। इस स्मृति का आधार आत्मा की अमरता ही है।

3. प्लेटो के अनुसार आत्मा सरल व अविभाज्य है तथा अवयवरहित होने के कारण उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। अतः वह अमर है।

4. प्लेटो कहते हैं कि आत्मा जीवनशक्ति है अर्थात यह जीवन का आधार है। अतः जीवन के आधार का नाश होना आत्मविरोधी बात होगी। अतः आत्मा को अमर व अविनाशी मानना ही तार्किक है।

5. प्लेटो के अनुसार बौद्धिक आत्मा को शाश्वत प्रत्ययों का ज्ञान होता है। अतः आत्मा को या तो प्रत्ययों का अंश होना चाहिए या प्रत्ययों के समान तो होना ही चाहिए।

क्योंकि समान को ही समान का ज्ञान हो सकता है।
अतः आत्मा प्रत्ययों के समान ही शाश्वत है।

6. आत्मा गति का स्रोत है। सभी जड़ पदार्थों में किसी चेतन सत्ता से ही गति मिलती है। अतः गति का मूल स्रोत आत्मा है तथा इसे शाश्वत मानना अनिवार्य है जिससे जगत् को हमेशा गति मिलती रहे।

7. प्लेटो के अनुसार न्याय-व्यवस्था भी तभी संभव है जब आत्मा स्थायी व अमर हो। मनुष्य को अपने कर्मों का फल अगले जीवन में मिलता है तथा वर्तमान जीवन पूर्व जन्मों के कर्मों का फल है। यह आत्मा की अमरता द्वारा ही संभव है।

8. वर्तमान जीवन में भी हमारी स्मृति का आधार आत्मा है। हमारा शरीर परिवर्तनशील है तथा हमारे बचपन की पुराने समय की स्मृतियाँ हमें हमेशा रहती हैं, इसका आधार आत्मा की अमरता ही है।